ताहिरा खान
सहायक अध्यापिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
डांडा जंगल, विकासनगर, देहरादून

डांडा जंगल– जहां आकार ले रहे हैं शिक्षा के प्रयोग

प्रधानाध्यापिका	–	अनीता चौहान
सी.आर.सी.सी.	–	मनोज राठौर
भोजन माता	–	लक्ष्मी देवी
नामांकन	–	45

गुड मॉर्निंग सर! वेलकम टु अवर स्कूल, ग्लैड टू मीट यू !" राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल में पहुंचते ही सभी बच्चे एक साथ आने वालों का स्वागत करते हैं। देहरादून के विकासनगर ब्लॉक में छोटा और सुन्दर सा गांव है डांडा जंगल। इस गांव तक पहुंचना थोड़ा कठिन काम है क्योंकि ये शहर से थोड़ा दूर जंगल के बीच में बसा है और जंगल के बीच संकरी सी कच्ची सड़क कभी भी परेशानी का सबब बन सकती है। इसी गांव में है ताहिरा जी का राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल। स्कूल में आने वाले ज्यादातर बच्चे जौनसारी भाषा बोलते हैं। अधिकतर बच्चों के माता पिता खेती–बाड़ी करते हैं।

यह स्कूल किस हाल में है इस बात का अंदाजा इस बात से लगाइये कि सर्दियों में धूप का एक टुकड़ा भी स्कूल तक नहीं पहुंच पाता। यही वजह है कि अभिभावकों के कहने पर कड़कड़ाती सर्दियों में यह स्कूल 3 महीनों के लिए अपनी बिल्डिंग से अलग हो जाता है। उस मौसम में यह स्कूल की बिल्डिंग से दूर जंगल में लगता है। बाहर से सामान्य से दिखने वाले इस स्कूल में जाने पर हमारे सामने ताहिरा जी की मेहनत और नए प्रयोगों का संसार खुलता है।

ताहिरा जी कक्षा 3 और 4 के बच्चों को पढ़ाती हैं। वे बच्चों को कहानी

सुनाती हैं, उनके साथ कवितायें करवाती हैं और गीत गुनगुनाती हैं। उनके बीच जमीन पर बैठकर उनकी साथी की तरह उनसे बातचीत करती हैं। हम सभी जानते हैं कि सम्मिलित कक्षाओं में काम करना और बच्चों को सिखा पाना कितना चुनौतीपूर्ण काम है। खासकर तब जबकि सभी बच्चे अलग–अलग अधिगम स्तर के हों। ताहिरा जी ने अनुभव किया कि चूंकि अधिकतर बच्चे हिंदी पढ़ नहीं पाते इसलिए उन्हें अन्य विषय समझने में भी कठिनाई होती है। इसी समस्या के समाधान के लिए उन्होंने दक्षतावार भाषा शिक्षण करना शुरू किया। उन्होंने दोनों कक्षा के बच्चों को दक्षताओं के आधार पर समूहों में बांटकर शिक्षण कार्य आरम्भ किया। इनकी कक्षा में हर बच्चा आज अपने आप कहानी और कविता बना लेता है और उसे लिख भी लेता है। बच्चों की लिखी कहानियों को चार्ट पेपर पर लिखकर पाठ की तरह उस पर चर्चा और विमर्श किया जाता है। बच्चे कहानियां बनाते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं, खुद प्रश्न–उत्तर करते हैं, डिबेट करते हैं और अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।

भाषा की कक्षाओं में जिस वक्त बच्चों को आनंद आ रहा था वहीं ताहिरा जी को एक अलग ही चिंता सताने लगी। उन्हें लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि भाषा शिक्षण में समय ज्यादा जा रहा हो और इस वजह से बच्चे अन्य विषयों की तरफ उदासीन हो रहे हों। इसका एक समाधान उन्हें सूझा टाइमटेबल में। उन्होंने सोचा कि टाईमटेबल बनेगा तो हर विषय को बराबर समय मिलेगा तब यह आशंका अपने आप दूर हो जायेगी। लेकिन टाईमटेबल बनाते समय भी एक चिंता सामने आ खड़ी हुई। टाइमटेबल बनाना भी बच्चों पर अपना फैसला थोपने जैसा ही तो नहीं होगा? भले ही यह शिक्षक द्वारा बच्चों के हित में लिया गया फैसला होगा लेकिन अगर इस इकतरफा को

दोतरफा बनाया जाए तो बच्चों को कितना आनंद आयेगा। ताहिरा जी कहती हैं कि "हम समाज में सबकी सक्रिय सहभागिता की बात करते हैं और कम समझदार व कम पढे–लिखे वर्गों का भी लोकतंत्र में, निर्णय लेने में प्रतिभाग को सुनिश्चित करने की बात करते हैं लेकिन बच्चों के लिए फैसले लेते समय यह सोचते हैं कि बच्चों को अपने भले बुरे का ज्ञान नहीं है। जबकि ऐसा होता नहीं है। बच्चे अपने बचपने के चलते हो सकता है किसी रोज या कुछ रोज तक सिर्फ कहानी सुनने या कविता सुनने की जिद करें और गणित या अन्य विषय पढ़ने से मना करें लेकिन इसका अर्थ नकारात्मक नहीं लिया जाना चाहिए न ही इसके एवज में उन पर जबरन विषय थोप दिया जाना चाहिए। बच्चों से बातचीत करते हुए उनका रुझान अन्य विषयों की तरफ करते हुए उनकी इच्छा और उनकी जरूरत के बीच संतुलन बनाया जा सकता है।"

ताहिरा जी जो कह रही थीं वो कर भी रही थीं। ऐसा करने के लिए उन्होंने सभी बच्चों की बैठक बुलाई। वो बच्चों से बात करती हैं और पूछती हैं कि "क्या आप लोग अपनी पसंद से अपने पढ़ने के लिए रोज की विषयवार समय सारिणी बनाना पसंद करोगे?" इस तरह की आजादी और उनकी मर्जी के बारे में पूछे जाने से बच्चे बहुत खुश हुए। दोनों कक्षाओं के बच्चों ने अपने पढ़ने के लिए स्वयं टाइम टेबल बनाया और फिर ताहिरा जी को देते हुए कहा कि" मैडम टाइमटेबल तो बन गया लेकिन अब आप एक घड़ी ला दो ताकि हम सब समय देखकर टाइम टेबल का पालन कर सकें।" बच्चों के ऐसा कहने से ताहिरा जी बहुत खुश हुईं। यह सोचकर कि बच्चे खुद ही समय की नियमितता के बारे में सोच रहे हैं। उन्होंने घड़ी लाकर कक्षा की दीवार पर टांग दी। अब सब बच्चे समयानुसार खुद अपने विषय की

पुस्तक निकाल लेते हैं या समूहों में बैठकर कार्य करने लगते हैं, कभी–कभार तो वे अपनी मैम को भी याद दिला देते हैं कि अब दूसरे विषय की पढ़ाई करने का समय है।

जिस तरह के स्कूल में हम पढ़े हैं, वहां अक्सर यह होता है कि शिक्षक और पाठ्यपुस्तक को पता होता है कि बच्चों को क्या सीखना आवश्यक है और इसके लिए पाठ्यपुस्तक में पाठ होते हैं। बच्चे पढ़े गए पाठ को समझ गए हैं या नहीं इस बात की पहचान इस बात से होती है कि वे इन पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों का उत्तर दे पाते हैं या नहीं। एक तो यह प्रश्न पर्याप्त नहीं किसी भी पाठ्यवस्तु की समझ को जांचने के लिए और दूसरा यह पाठ को समझने पर कम और रटने पर ज्यादा केन्द्रित होते हैं। इस सब विचार के चलते ताहिरा जी ने अपनी कक्षा के बच्चों को प्रोत्साहित किया कि वे पढ़े गए पाठ पर चर्चा करके उन पर प्रश्न बनाएं और एक दूसरे से पूछें। बच्चों ने इसे एक तरह का खेल सा बना लिया जहां वे समूह बनाकर एक दूसरे से प्रश्न करते हैं और हर सही उत्तर और सही प्रश्न पर अंक देते हैं। हर पाठ पर ढेरों प्रश्न बन जाते हैं और पाठ से हर बच्चा पूरी तरह रू–ब–रू हो जाता है।

अगर कोई इस विद्यालय में स्कूल की छुट्टी के बाद जाए तो अक्सर छुट्टी के बाद भी आधे–एक घंटे तक ताहिरा जी को स्कूल में पढ़ाते पायेगा। वो कक्षा में पिछड़ रहे बच्चों को छुट्टी के बाद रोककर पढ़ाती हैं। वे बच्चों को इतना प्यार करती हैं कि कक्षा के बाकी बच्चे भी रुके रहते हैं और मैडम उनको भी पढ़ा देती हैं। ताहिरा जी ने स्कूल के बाद खुद तीन गांव (जहां से ये बच्चे आते हैं) जाकर अभिभावकों से बच्चों को स्कूल के बाद रोकने और गर्मी और सर्दी की छुट्टियों में बच्चों के लिए कैम्प चलाने की लिखित अनुमति ले ली ताकि उनके बच्चे अगर थोड़ी देर से भी घर आते हैं तो उसकी वजह अभिभावकों को पता रहे।

जून 2016 में रमजान के महीने में जब स्कूलों में गर्मियों की छुट्टियां थीं, तब राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल में 5–13 जून को एक समर कैम्प चल रहा था। ताहिरा जी के मन में विचार आया कि मेरे स्कूल के बच्चे

छुट्टियों में क्या कर रहे होंगे, क्या इतने दिनों में जो भी उन्होंने सीखा है उसे वे लम्बी छुट्टियों के दौरान भूल तो नहीं जायेंगे। इन बच्चों के पास तो मनोरंजन के भी कोई खास साधन नहीं है और न ही पर्याप्त सीखने के अवसर मौजूद हैं। बच्चों को नयी कक्षा में आए हुए थोड़ा ही समय हुआ था और कक्षा में विषयवार एक–दो ही सन्दर्भों पर चर्चा हो पाई थी। बच्चों से विषय पर ज्यादा बातचीत नहीं हो पाई तो लगा क्यों न इस समय का सदुपयोग किया जाये और बच्चों के साथ उनकी समस्याओं का समाधान ढूंढने में उनकी मदद की जाये।

तब उन्होंने अभिभावकों से लिखित अनुमति लेकर और अपने अधिकारियों को सूचित करके अपने स्कूल में एक समर कैम्प का आयोजन किया। इसके लिए प्रतिदिन दो–तीन घंटे योग, गीत, कविता, कहानी, कई तरह के खेल, नाटक, कठपुतली बनाना और अन्य शैक्षिक विधाओं पर काम किया गया। कैम्प में समुदाय के लोगों को भी शामिल किया जैसे एक लड़की जो कॉलेज में पढ़ती थी उसने योग सिखाने में ताहिरा जी की मदद की। ताहिरी जी प्रतिदिन अभिभावकों को स्कूल आकर बच्चों को काम करते देखने के लिए आमंत्रित करती हैं। समर कैम्प के समापन पर उन्होंने हर बच्चे को कैम्प में उनकी गतिविधियों की तस्वीरों को सुन्दर से संदेश के साथ फ्रेम करवाकर उनके अभिभावकों द्वारा उन्हें दिलवाया।

बच्चों का जीवन भी कई बार इतना सरल नहीं होता जितना बड़ों को लगता है। उनके जीवन में भी कई तरह की समस्याएं होती हैं जो वे कई बार या तो बड़ों को बता नहीं पाते या फिर बड़े उनमें दिलचस्पी नहीं लेते। यही सोचकर ताहिरा जी ने कक्षा में एक गत्ते की पत्रपेटी 'मन की बात' लाकर रख दी। बच्चे अपनी शिक्षिका को तमाम तरह के पत्र लिखते हैं जिनमें, उनके बड़े भाई बहनों से शिकायत, घर के काम काज की खबर, छुट्टी पर जाने के लिए मैडम जी से शिकायत और उनकी याद, कक्षा में किसी साथी द्वारा किये गए भेदभाव की शिकायत आदि लिखते हैं। वो रोज स्कूल के समय के बाद घर जाने से पहले उनके पत्र बच्चों की अनुपस्थिति में पढ़ती हैं और उनके सुझावों और शिकायतों का हर संभव हल करने की योजना बनाती हैं। कई समस्याएं ऐसी होती हैं जिसके लिए वे बच्चों के घर

जाकर उनके अभिभावकों से मिलती हैं और उन्हें समझाती हैं। उदाहरण के लिए कई बच्चे अक्सर छुट्टी पर रहते हैं जिसके कारण वो पढ़ने में पिछड़ जाते हैं। उनसे इस बारे में बात करने पर पता चला कि उनके माता–पिता मजदूरी करने के लिए चले जाते हैं तो छोटे भाई–बहनों का ख्याल रखने और घर में उनके लिए खाना बनाने के लिए अक्सर वे बच्चों को घर पर रोक लेते हैं। मैडम ने अभिभावकों से मिलकर उन्हें समझाया और यह सुनिश्चित करवाया कि जितना संभव हो सके वे बच्चों को स्कूल भेजें और बहुत आवश्यक होने पर ही घर पर रोकें।

अभिभावकों से कई बार यह बात पता चली कि उनकी इच्छा तो बच्चों को प्राइवेट स्कूल भेजने की है लेकिन पैसों की कमी होने के कारण लड़कों को प्राइवेट स्कूलों में और लड़कियों को सरकारी स्कूलों में भेजते हैं। जो लड़के इस स्कूल में आते हैं, उनमें से अधिकतर इस वजह से आते हैं कि उनके अभिभावकों के पास या तो प्रॉइवेट स्कूल की फीस देने लायक पैसे नहीं होते या फिर ये बच्चे प्रॉइवेट स्कूल में पिछड़ गए होते हैं तो अभिभावकों को लगता है कि इन पर इतने पैसे खर्च करके कोई फायदा नहीं। एक बार चर्चा में यह बात मैडम को समझ आई कि बच्चों में अपने सरकारी स्कूल को लेकर थोड़ी हीन भावना है ज्यादा बात करने पर मैडम को पता चला कि इन बच्चों के भाई जिन स्कूलों में जाते हैं वहां बढ़िया स्कूल की ड्रेस, आई कार्ड आदि दिखावटी चीजों के कारण इन बच्चों को अपना स्कूल कुछ निम्न दर्जे का लगता है। मैडम ने बच्चों को समझाया कि देखो तुम खुद से कहानी बनाते हो, लिखते हो और अन्य कई तरह की गतिविधि करते हो इतना तो किसी प्रॉइवेट स्कूल में पढ़ाया नहीं जाता। यह स्कूल तो बिल्कुल घर जैसा ही है जहां तुम्हें प्यार किया जाता है, तुम्हारे खाने का खयाल रखा जाता है, किताबें मिलती हैं और स्कूल ड्रेस भी मिलती है।

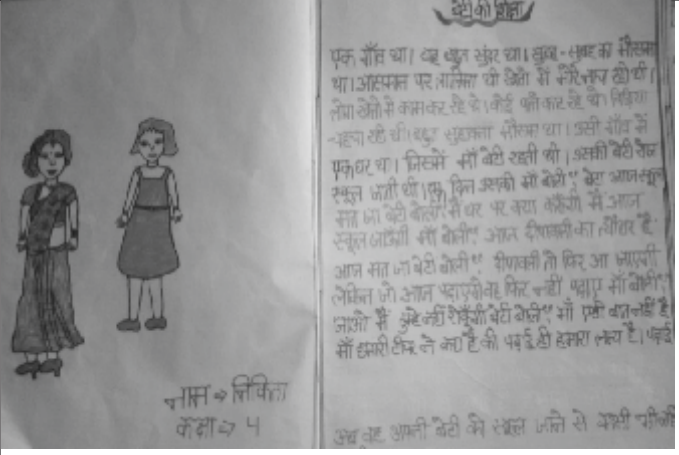

बच्चे तो संतुष्ट हो गए लेकिन मैडम के मन में कुछ था जो खटकता रहा। उन्होंने सभी बच्चों से उनके चित्र मांग कर खुद अपने हाथ से उनके आई–कार्ड डिजाइन करके बाजार से छपवाये। सभी बच्चे बहुत गर्व से आई–कार्ड को गले में डालकर स्कूल आते हैं।

ताहिरा जी का मानना है कि अगर शिक्षक चाहते हैं कि बच्चे खुद से पढ़ने और सीखने की आदत को विकसित करें तो यह जरूरी है कि वह स्वयं भी पढ़ते–लिखते रहें। ताहिरा जी नियमित तौर पर शिक्षण सम्बन्धी सन्दर्भ सामग्री पढ़ती रहती हैं। वो सेवारत प्रशिक्षणों में मास्टर ट्रेनर रहती हैं, सेमिनारों में अपने पर्चे पढ़ती हैं और उन्होंने शिक्षकों के लिए भाषा शिक्षण पर सत्र भी लिए हैं। अम्बेडकर यूनिवर्सटी और अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित एक सेमिनार में उनका आलेख 'बदलते परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका' चयनित हुआ है। उनके प्रयासों को देख कर सबके मन में उम्मीद जागती है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल के बच्चे सुरक्षित हाथों में हैं और उनका भविष्य उज्जवल है।

(ताहिरा खान से हुई रोविन पुष्प की बातचीत पर आधारित)